राजस्थान में हूणों का आधिपत्य

डॉ. बलवीर चौधरी,

सह आचार्य – इतिहास
राजकीय महाविद्यालय जोधपुर

चीन के ऐतिहासिक ग्रंथों से ह्गनू अथवा हूण जाति से हमारा परिचय दूसरी शताब्दी ई. पू. में होता है। इस बर्बर जाति ने पष्चिमी चीन के कानसू नाम प्रांत में निवास करने वाली यू: ची जाति को पराजित कर उसे अपना मूल निवास स्थान छोड़ने के लिए बाध्य किया था। कालांतर में हूण भी अपने नये निवास स्थान की खोज में पष्चिम की ओर चल पड़े। उनकी एक शाखा फारस में वंक्षु (आक्सस) नदी के तट पर आबसी जो श्वेत हूण अथवा एप्थेलाइट कहलाई और दूसरी शाखा जो पष्चिमी शाखा था उसने यूरोप में काफी उथल–पुथल मचाया था।[1] श्वेत हूणों के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने कालांतर में गांधार पर अधिकार स्थापित कर लिया था।[2] स्कन्द गुप्त के शासनकाल में उन्होंने सिंधु को पार करके ग्रुप्त स्रामाज्य के लिए महान् संकट उपस्थित कर दिया था।[3] मार्टिन की मान्यता है कि बर्बर हूणों का पहला आक्रमण गांधार पर चतुर्थ शताब्दी ई. में हुआ था।[4] जिसे समुद्रगुप्त ने किदार कुषाणों की सहायता करके पराजित किया था।[5] स्कन्दग्रुप्त के शासनकाल में हूणों का जो आक्रमण हुआ था उसकी पुष्टि भीतरी अभिलेख एवं साहित्यिक साक्ष्यों से होती है।[6] स्कन्दगुप्त ने हूणों को पूरी तरह पराजित कर दिया था। यद्यपि यह निष्चित नहीं है कि यह गुप्त हूण संघर्ष किस स्थल पर हुआ था। श्री जगन्नाथ तथा डॉ. उपेन्द्र ठाकुर की मान्यता है कि हूणों के आक्रमण का लक्ष्य सौराष्ट्र तथा मालवा थे।[7]

स्कन्दगुप्त के शासनकाल (455–467 ई.) के पष्चात् हूणों का आक्रमण तोरमाण के नेतृत्व में हुआ। संभवतः यह आक्रमण बुद्धगुप्त के राज्यकाल के अंतिम वर्षों में हुआ था। तोरमाण के संबंध में यह सामान्य धारणा है कि पंजाब, राजस्थान का कुछ क्षेत्र तथा पूर्वी मालवा उसके राज्य में सम्मिलित था।[8] पंजबा के कुरा नाम स्थान से उसका तिथिविहीन लेख मिला है।[9] हूणों ने गुप्त सम्राटों की कमजोरी का लाभ उठाकर पूर्वी मालवा पर भी अपना अधिकार कर लिया था। एरण के प्रस्तर वराह मूर्ति लेख से ज्ञात होता है कि मातृ विष्णु के अनुज ने तोरमाण के प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया था।[10] इसी प्रकार भानुगुप्त के एरण से प्राप्त 510 ई. के लेख से ज्ञात होता है कि उस वर्ष भानुगुप्त और उसके मित्र गोपराज ने एरण में एक भंयकर युद्ध लड़ा था। इसमें गोपराज वीरगति को प्राप्त हुआ और उसकी पत्नी सती हो गई।[11] संभवतः यह युद्ध हूणों के विरुद्ध लड़ा गया था। विद्वानों की मान्यता है कि हूणों ने पंजाब में अपनी शक्ति दृढ़ करके सिंधु और गंगा की घाटियों को जोड़ने वाले दिल्ली–कुरूक्षेत्र–पानीपत मार्ग से घुसकर अंतर्वेदी पर धावा बोला और सीधे बंगाल, बिहार पर पहुंचने की चेष्टा की।[12]

विद्वानों की यह भी धारणा है कि तोरमाण पंजाब की ओर से गौड़ व मगध की और बढ़ा था और वहां से पूर्वी मालवा की ओर। राजस्थान और पष्चिमी मालवा पर उसके अधिकार के साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।[13] लेकिन डॉ. दषरथ शर्मा की मान्यता है कि हूणों ने राजस्थान से होकर मालवा जाने वाले मार्ग को अपनाया था।[14] इसी तरह कुवलयमाला नामक ग्रंथ में कहा गया है कि तोरमाण ने संपूर्ण जगत का उपभोग किया।[15] इस संबंध में हमारी मान्यता है कि संपूर्ण जगत का भाग करने वाले इस हूण नेता के आधिपत्य में पूर्वी मालवा के अलावा राजस्थान का कुछ क्षेत्र भी था।

हूण नरेष तोरमाण का उत्तराधिकारी मिहिरकुल था। जो गुप्त सम्राट नरसिंह गुप्त बालादित्स का समकालीन था। चीनी यात्री युआनच्चांग के अनुसार नरसिंह गुप्त बालादित्य ने मिहिरकुल को पराजित किया था।[16] उसका मालवा के राजा यषोधर्मा से भी युद्ध हुआ था। मन्दसौर के तिथि विहीन अभिलेख के अनुसार यषोधर्मा ने उन प्रदेषों को भोगा था जिनको स्वयं गुप्त नरेष और हूण स्वामी भी अपने वंष में नहीं कर पाए थे। इसी लेख के छठे श्लोक में कहा गया है कि उसने उस मिहिर कुल को नतमस्तक किया जिसका सिर भगवान स्थाणु के अतिरिक्त कभी किसी के सम्मुख नहीं झुका था।[17] इससे स्पष्ट है कि मिहिरकुल को यषोधर्मा ने पूरी तरह पराजित कर दिया था। संभवतः यह घटना 532 ई. में घटी थी।

अब यह प्रष्न उठता है कि मिहिरकुल पष्चिमी मालवा किस मार्ग से होकर गया था। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि वह पष्चिमी मालवा, पूर्वी मालवा से होकर गया था क्योंकि पूवी मालवा पर उसे पिता तोरमाण का अधिकार होने से यह मार्ग सुगम था।[18] लेकिन हमारी धारणा है कि मिहिरकुल पष्चिमी मालवा राजपूताने के मार्ग से गया था क्योंकि राजस्थान में हूण आक्रमण के कई प्रमाण मिलते हैं जो इस प्रकार है –

प्रथम, कोटा के भीमचूनड़ी अभिलेख में किसी ध्रुव स्वामी का उल्लेख मिलता है जो हूण से संघर्ष करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ था। यह अभिलेख गुप्त लिपि में है।[19]

द्वितीय, श्री दयाराम साहनी की मान्यता है कि बैराठ के बौद्ध स्मारक हूण आक्रमण के परिणामस्वरुप नष्ट हुए थे। इसी प्रकार डॉ. गुइत्ज का कथन है कि रंगमहल, बडपोल और पीर सुल्तान की थेरी के बौद्ध स्तूप भी हूण आक्रमण से नष्ट हुए थे।[20]

तृतीय, राजस्थान में छठी शताब्दी से लेकर दषवीं शताब्दी और कुछ बाद के ऐसे सिक्के मिले हैं जिन्हे अफगानिस्तान और ईरान के ससैनियन वंषी नरेषों के सिक्कों की नकल मात्र कहा जाता है लेकिन इनको भारत में चलाने का श्रेय हूणों को दिया जाता है।[21] इसी प्रकार राजस्थान के आवानेरी, रवोह, रानियावास, खेजरोली, लोसल (सीकर), सांभर, देसूरी, नागौर, जालोर, चौहान, सरदारगढ़, पिपलान सायरा, रानकपुर रोड़ जूना खेड़ा तथा मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों से हूणों की रजत एवं स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त हुए है। वनज में ये सिक्के 60 से 65 ग्रेन तक के हैं। इन सिक्कों के चित्र की ओर राजा का चेहरा ऐसे ढंग से बनाया गया है कि जिसे लोग गधे जैसा मानने लगे। इसलिए इन सिक्कों को गधिया या गधंया प्रकार का सिक्का कहा जाता है। इसका दूसरा कारण यह भी है कि ईरान अफगानिस्तान का ससैनियन शासक राजा बहराम पंचम, जो कि गधे के षिकार का शौकीन था और जिस बाद में बहरामगुर कहा जाने लगा था उसके सिक्कों की नकल पर ये सिक्के भारत में चलाए गए। सिक्कों के पृष्ठ भाग पर अग्निवेदी उभवा सिंहासन को रेखाओं और बिन्दुओं के माध्यम से बनाया गया है। इस प्रकार के सिक्के मोटे, गोल और छोटे भी है।[23]

चतुर्थ, कुछ साहित्यिक एवं लौकिक परंपराओं से भी राजस्थान में हूण आक्रमण की सूचना मिलती है। जैन आचार्य सोमदेव (10वीं शताब्दी ई.) ने एक परंपरा का उल्लेख करते हुए बतलाया है कि हूण नरेष ने नगरी के निकट चित्रकूट अथवा चित्तौड़ को जीता था ? संभवतः इस घटना का संबंध मिहिर कुल से है, 530 ई. में शासन कर रहा था।[24] राजस्थान के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पुष्कर के संबंध में भी एक परंपरा प्रचलित है कि यह तीर्थ हूणों के आक्रमण से क्षतिग्रस्त हो गया था। बाद में मंडोर के प्रतिहार राजा नाहड़राव ने इस तीर्थ की मरम्मत करवाई थी।[25]

पंचम, बयाना के मुद्राओं के ढेर से गुप्त सम्राट स्कन्द गुप्त, कमादित्य का अंतिम सिक्का मिला है। जिससे संकेतिन होता है कि गुप्त काल में ही इस क्षेत्र के लोगों का जीवन असुरक्षित हो गया था। इसलिए किसी धनी व्यक्ति ने अपने जीवन की सुरक्षा हेतु विषाल मुद्रा भंडार को भूमि में गाड़कर कहीं अन्य स्थान पर चले जाना उचित समझा था। अब प्रष्न यह है कि स्कन्द गुप्त के शासनकाल में अथवा उसके तुरंत पष्चात् बयाना के लोगों का जीवन असुरक्षित क्यों हो गया । इस प्रष्न का उत्तर इस प्रकार दिया जा सकता है कि स्कन्द गुप्त के राज्यकाल में अश्ज्ञवा उसके कुछ समय पष्चात् बयाना में हूणों के आक्रमण से अव्यवस्था उत्पन्न हो गई थी।[26]

षष्ठम, डॉ. के.सी जैन की मान्यता है कि गुप्तकाल में रैरह, नलियासर तथा नगर क्षेत्र घनी आबादी वाले और सुव्यवस्थित रुप से बसे हुए थे जिनकी पुष्टि इस क्षेत्र में हुई खुदाई से होती है। लेकिन इस क्षेत्र को भी हूण आक्रमण से कष्ट उठाना पड़ा और यह वैभव विहीन हो गया। इस क्षेत्र में उत्खनन के समय बड़ी मात्रा में अस्थियों व भवनों के खण्डहर मिलने से यह प्रमाणित होता है कि यहां गुप्तकाल के अंतिम वर्षों में कोई भयंकर, अचानक आक्रमण हुआ था।[27]

सप्तम, नगरी (चित्तौड़) के एक षिव मंदिर का पत्थर का तारण छठी या सातवीं शताब्दी ई. का बतलाया जाता है। इस तोरण के संबंध में कहा जाता है कि इस स्थल पर पहले एक बौद्ध स्तूप था लेकिन हूण नरेष मिहिरकुल ने उसे तुड़वा दिया तथा उसे षिवमंदिर में परिवर्तित कर दिया, उसी समय यह तोरण बनवाया गया।[28]

अष्टम, एक परंपरानुसार राजस्थान के कुछ गांव हूण गावं, हूणावास तथा हूणामंडल के नाम से प्रसिद्ध है।[29] इसी प्रकार राजस्थान में उपासना की जाने वाली देवी को हूणा या हूक देवी कहा जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राजस्थान पर हूण आक्रमण अवष्य हुआ था। यद्यपि बाद में राजस्थान के विषाल भू–भाग पर यषोधर्मा का आधिपत्य स्थापित हो गया था।[30] लेकिन हूणों के आक्रमण से यहां की संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा। शीघ्र ही हूण राजपूतों के 36 कुलों में सम्मिलित कर लिए गए। परिणामस्वरुप हूणों का राजपूत घरानों से विवाह संबंध स्थापित हो गया। उदयपुर के निकट आहड़ के गुहिल वंषी शक्ति कुमार के अभिलेख से स्पष्ट है कि उसके पूर्वज पुल्लट की महारानी हरियदेवी हूणा वंषजा थी।[31] यह भी संभव है कि हूण आक्रमण से राजस्थान व उसके निकट के प्रदेषों में शासन करने वाली यौधेय, कुणिन्द वह अम्बष्ट आदि जातियों को बहुत क्षति उठानी पड़ी[32] चाहे वे पूरी तरह से नष्ट न हुई हों।

संदर्भ ग्रंथ

1. मजूमदार, आर.सी. तथा पुसाल्कर, ए.डी., क्लासिकल एज, पृष्ठ 30–31
2. बील, रिकार्डस, पृष्ठ 8
3. मजूमदार तथा अल्तेकर, वाकाटक गुप्त युग, पृष्ठ 182
4. मार्टिन, जे.आर.ए.एस.बी. (एल.) 3 एन.एस.47 पृष्ठ 23
5. गोयल, श्रीराम, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास भाग 3, पृष्ठ 138
6. सरकार, दिनेषचन्द्र, सलेक्ट इन्स्किष्पन्स, पृष्ठ 323 (भीतरी लेख), जूनागढ़ स.इ., पृष्ठ 309 (यहां हूणों का म्लेच्छ कहा गया है) हूण आक्रमण की गूंज सोमदेव कृत कथासरित्सोगर, बौद्धग्रंथ चन्द्रगर्भ परिपृच्छा, सोमदेव के नीति वाक्यामृत और चान्द्रव्याकरण से सुनाई देती है। हूणों का प्रथम साहित्यिक उल्लेख रघुवंष (सर्ग 4, श्लोक 67–68) में मिलता है।
7. जगन्नाथ, प्रोसिडिंग्स ऑव इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1950, पृष्ठ 160, उपेन्द्र ठाकुर, दि हूणाज इन इंडिया।
8. जैन, के.सी. मालवा थ्रू, दि एजज, पृष्ठ 247
9. एपिग्राफिमा इंडिका, पृष्ठ 238
10. सरकार, य.इ., पृष्ठ 421
11. वही, पृष्ठ 346
12. गोयल पूर्वी, पृष्ठ 255
13. बसंल, चन्द्र प्रकाष, राजहिस्को प्रोसिडिंग्स, 1972, पृष्ठ 29
14. शर्मा, दषरथ, राजस्थान थ्रु दि एजज, पृष्ठ 61
15. ज.वि.ओ.रि.सो पृष्ठ 28
16. बील, रिकार्डस ऑव दि वेस्टर्न वलेड, भाग 1 पृष्ठ 168–171
17. सरकार, पूर्वो, पृष्ठ 419
18. बसंल, पूर्वो, पृष्ठ 29
19. शर्मा, एम.एल. कोटा राज्य का इतिहास, पृष्ठ 35
20. शर्मा, डी. पूर्वों, 61
21. परमार, बी.एम.एस, दि रिसर्चर, पृष्ठ 12
22. वही।,
23. परमार, दि रिसर्चर भाग 12–13 पृष्ठ 12
24. जैन, के.सी, दि सिटीज एंड टाउन्स ऑव राजस्थान, पृष्ठ 96
25. वही, पृष्ठ 101
26. वही, पृष्ठ 573–74
27. वही, पृष्ठ 574
28. वही, पृष्ठ 100
29. सोमानी, आर.वी, हिस्ट्र ऑव मेवाड़, पृष्ठ 26–27
30. शर्मा, दषरथ, पूर्वो पृष्ठ 61
31. इंडियन एण्टिक्वेरी, भाग 39, पृष्ठ 191
32. ठाकुर, उपेन्द्र, दि हुणाज इन इंडिया, पृष्ठ 92–223